डॉ. नलिन

पानी जब था ही नहीं, नहीं जगी थी प्यास।
अब पानी मिलने लगा, फिर भी मिटी न प्यास।।
फिर भी मिटी न प्यास, बहाते हैं मनमाना।
पानी का क्या मोल, कभी क्या हमने जाना।
कहे नलिन कविराय, मरेगी कल जब नानी।
होगा तब कुहराम, खत्म होगा जब पानी।।
धरती बादल को तके, ढूँढ रहे पशु घास।
व्यर्थ लगाये हैं यहां, खुशहाली की आस।।
खुशहाली की आस, नहीं अब दिखती कलियाँ।
कहां गये वन-बाग, कहां गांवों की गलियां।
कहे नलिन कविराय, कि सरिता नित-नित मरती।
फिर लाओ बरसात, छुए बादल को धरती।।
वृक्ष लगाओ आज फिर, कृपा करें घन श्याम।
नदियां फिर कल-कल बहें, धरा बने सुरधाम।।
धरा बने सुरधाम, मिटे जन-जन का दुखड़ा।
मन हो जाएं शुद्ध, प्यार से चमके मुखड़ा।
कहे नलिन कविराय, न जल को व्यर्थ गंवाओ।
जल लाए उल्लास, नित्य ही वृक्ष लगाओ।
मन करता है क्या कभी, बैठें नदियां तीर।
आंखों में ठंडक भरें, पियें ओक से नीर।।

पियें ओक से नीर, निहारें प्रकृति छटा को।
सूखा है जो विश्व, बुलाएं पुनः घटा को।
कहे नलिन कविराय, बाद में करता है तन।
पहले सारा काम, जान लो करता है मन।।
नदियां मैली शुष्क हैं, कर्णधार हैं मौन।
पुनः जन्म लेंगे यहीं, करे सदिच्छा कौन।।
करे सदिच्छा कौन, नर्क के दृश्य दिखे हैं।
और समय ने आज, श्याम ये पृष्ठ लिखे हैं।
कहे नलिन कविराय, बीतती जाती सदियां।
कैसा विषमय पवन, दे रही मैली नदियां।।
जल भरने गोरी चली, सूज गये हैं पांव।
मन ही मन चिन्तन करे, अच्छी ब्याही गांव।।
अच्छी ब्याही गांव, भाग्य को कोसे जाए।
जाएगा जल पास, राज के धोखे खाए।
कहे नलिन कविराय, मरा करती है पल-पल।
भूखे सोएं अगर, नहीं जाए भरने जल।।
पशु भी पानी ढूँढते, फिरते हैं बेहाल।
पंछी फाड़े चोंच हैं, देख रहे हैं काल।।
देख रहे हैं काल, नहीं मिलता कुछ हल है।
खुद भी वे निरूपाय, मनुज का कैसा छल है।
कहे नलिन कविराय, तड़पते कैसे शिशु भी।
ममता, समता भूल, हुए हैं हिंसक पशु भी।।
पानी-पानी की मची, चारों ओर पुकार।
आंखों का पानी गया, होती है नित रार।।
होती है नित रार, चैन, सुख पीछे छूटे।
पानी खोकर हाय, भाग्य पाते हैं फूटे।
कहे नलिन कविराय, बात हमने यह जानी।
कभी न आई शर्म, हुए कब पानी-पानी।।
सूने पनघट हो गये, रहा न नाम-निशान।

नई किरण का अब कहीं, दिखता नहीं विहान।।
दिखता नहीं विहान, स्वप्न की पांखें टूटी।
आशा मर-मर जाय, जिन्दगी किसने लूटी।
कहे नलिन कविराय, कल्पना नभ को छूने।
जाएगी किस ठौर, हुए जब पनघट सूने।।
जब तक जल मिलता रहा, करते रहे किलोल।
अब जल ओझल हो गया, पता चला है मोल।।
पता चला है मोल, न फिर भी रहे बचाए।
इसके बदले खूब, चले हैं शोर मचाए।
कहे नलिन कविराय, चलेगा यह सब कब तक।
नहीं मिलेगा त्राण, बहाएंगे जल जब तक।।
आंखों की ठंडक गई, सिर से गायब छाँव।

गुम विकास के नाम पर, हरियाली के गांव।।
हरियाली के गांव, दिखे सब सूखा-सूखा।
होती भागमभाग, फिरे जन भूखा-भूखा।
कहे नलिन कविराय, बात यह है लाखों की।।
आखों से है जगत, करो चिन्ता आखों की।
पेड़ काट लो शौक से, पर रख लो यह ध्यान।
नहीं रहेगा आपका, जग में नाम-निशान।।
जग में नाम-निशान, पीढ़ियां तक तरसेंगी।
नहीं घटाएं झूम, कभी आकर बरसेंगी।
कहे नलिन कविराय, नाश की देख बाट लो।
फिर चाहो तो रोज, बहुत से पेड़ काट लो।।

संपर्क करें:
डॉ. नलिन
4ई 6, तलमंडी, कोटा-324 005
राजस्थान
मो. नं. 09413987457